चौटाला फिर सक्रिय, हरियाणा में राजनीतिक गर्मी बढ़ी

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली पूर्व मुख्यमंत्री और इनैलो सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला शुक्रवार को तिहाड़ जेल से बाहर आ गए। अब वो आज़ाद पंछी हैं। अगर वो राजनीतिक रूप से सक्रिय हुए तो हरियाणा में राजनीतिक समीकरण बदल सकते हैं। हरियाणा की राजनीति आने वाले दिनों में बहुत दिलचस्प होने जा रही है। भाजपा की सहयोगी जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) में तोड़फोड़ हो सकती है या जेजेपी का इनैलो में विलय हो सकता है।

कोरोना की वजह से वह जेल से पहले ही बाहर थे। जेबीटी शिक्षक भर्ती घोटाले में उनकी सजा 23 जून को ही पूरी हो चुकी थी। तिहाड़ जेल से उनकी रिहाई की औपचारिकता शुक्रवार को पूरी हो गई। वह सुबह ही तिहाड़ पहुंचे। एक फ़ॉर्म भरा और अपना सामान वग़ैरह वहाँ से लेकर गुड़गाँव अपने घर के लिए रवाना हो गए। उनके साथ एक लंबा क़ाफ़िला था।

जेल से बाहर आने के बाद चौटाला ने मीडिया से कहा कि वो पार्टी कार्यकर्ताओं की इच्छाओं के अनुरूप चलेंगे। हरियाणा की जनता के हितों के लिए मैं हर पाबंदी तोड़ दूँगा।

जाट राजनीति प्रभावित होगी

हरियाणा में चार दशक से जाट-गैर जाट की राजनीति होती रही है। इस समय जाट राजनीति भूपेंद्र सिंह हुड्डा,ओमप्रकाश चौटाला और उनके पुत्र अभय चौटाला और पौत्र दुष्यंत चौटाला के इर्दगिर्द घूम रही है। पहले भजनलाल को और अब हरियाणा में मनोहर लाल खट्टर को गैर जाट राजनीति के चेहरे के रूप में देखा जा रहा है।

इसी सोच के साथ राजनीति में नये चेहरे मनोहर लाल खट्टर पर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने मुख्यमन्त्री बनाने का दांव खेला था। पहले टर्म में उनका यह दांव फिट भी बैठा। दूसरे टर्म यानि पिछले विधानसभा चुनाव में पर्याप्त सीटें नहीं जीतने के बावजूद मोदी और शाह ने मात्र ग़ैर जाट राजनीति का रूतबा बरकरार रखने के लिए खट्टर को लगातार दूसरी बार मुख्यमन्त्री बनाया। करनाल से विधायक बने मनोहर लाल को उत्तरी हरियाणा की उपेक्षा होने और साथ गैर जाट होने का फ़ायदा भी मिला।

अब प्रदेश की राजनीति में जाट वोटों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की होड़ मच गई है। जाट बिरादरी के लोगों का अधिकतर झुकाव भूपेन्द्र हुड्डा की तरफ होने के कारण इनैलो और जेजेपी नेता अक्सर हुड्डा को टरगेट कर अपनी राजनीतिक चालें चलते रहते है।

कांग्रेस और इनैलो में होगा राजनीतिक युद्ध

अब ओमप्रकाश चौटाला की रिहाई के साथ ही कांग्रेस और इनैलो में राजनीतिक युद्ध शुरू होने की वजह भी यही गिनवाई जा रही है। हुड्डा ने कांग्रेस संगठन पर क़ब्ज़े के लिए मुहिम शुरू कर दी है। हुड्डा समर्थक विधायकों ने गुरूवार को दिल्ली में कांग्रेस के हरियाणा प्रभारी विवेक बंसल से मिलकर पार्टी संगठन के लचर होने का आरोप लगाया। यह अप्रत्यक्ष रूप से हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष कुमारी शैलजा पर हमला था। हुड्डा की इस मुहिम को चौटाला की सक्रियता से जोड़ा जा रहा है। हुड्डा ख़ेमे का मानना है कि चौटाला का सामना करने के लिए हमें अब पार्टी कैडर और संगठन की ज़रूरत पड़ेगी।

इनैलो के नेता हुड्डा पर चौटाला को जेल करवाने और भाजपा से सांठगांठ के आरोप लगा कर हुड्डा के जनता में लगाव को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इसीलिए हुड्डा को संगठन की ज़रूरत पड़ रही है।

पिछले विधानसभा चुनाव में जाट मतदाता भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व वाली कांग्रेस और इनैलो से टूट कर बनी दुष्यंत चौटाला की जेजेपी के बीच बंट गए थे।

पिछले दो चुनावों में क्या हुआ था

इनैलो को इससे तगड़ा नुकसान हुआ था, क्योंकि इनैलो के अधिकतर नेता एवं कार्यकर्ता जेजेपी के पाले में खड़े हो गए थे। इनैलो की हालत यह हो गई थी कि अभय चौटाला ही केवल विधानसभा पहुंच सके। जबकि 2014 में इनैलो ने अभय चौटाला के नेतृत्व में चुनाव लड़कर 19 सीटे जीतकर 24 फीसदी से अधिक मत हासिल किए थे और कांग्रेस 20 फीसदी से अधिक मत हासिल कर 15 सीटें जीती पाई थीं। भाजपा को 33 फीसदी से अधिक मत मिले थे और वह 47 सीटें लेकर मोदी नाम के सहारे सत्ता में आ गई थी।

भाजपा को 2019 के चुनाव में गैरजाटों का समर्थन मिला और वह पिछले चुनाव की अपेक्षा सवा तीन फीसदी की बढ़ोतरी कर 36 फीसदी से अधिक मत हासिल करने में सफल रही। यह बात अलग है कि उसकी सात सीटें घट गईं। फिर भी वह चालीस सीटें ले आई और दुष्यंत की जेजेपी के साथ उसने गठबंधन कर सरकार बना ली। पिछले विधानसभा चुनाव में इनैलो के वोट बैंक से बहुत बड़ा हिस्सा जेजेपी के खाते में चले जाने से उसे 18 फीसदी वोट मिले व उसके दस विधायक जीते। इस चुनाव में सबसे अधिक फायदा कांग्रेस का हुआ। पिछले चुनाव की अपेक्षा उसका मत प्रतिशत सात फीसदी से भी अधिक बढ़कर 28 फीसदी के करीब पहुंच गया।

अब इनैलो सुप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला के बाहर आने के बाद वह अपनी पूरी ताकत लगाने की रणनीति बना चुके है। इनैलो से जेजेपी में गए नेताओं व कार्यकर्ताओं की वापसी के साथ दूसरे दलों के नेताओं को इनैलो के पाले में खड़ा कर ओमप्रकाश चौटाला हरियाणा में फिर से इनैलो का डंका बजाने का प्रयास करेंगे।

किस तरफ़ जाएगा जाट मतदाता

हरियाणा में विधानसभा चुनाव अभी दूर हैं लेकिन इनैलो अगर उसकी तैयारी शुरू करेगी तो बाक़ी दलों को भी जुटना पड़ेगा।

इनैलो को मजबूती मिलने से हुड्डा के नेतृत्व वाली कांग्रेस के जाट वोट बैंक में भी सेंधमारी की सम्भावनाएं बढ़ गई है। जैसे इनैलो के वोट बैंक को जेजेपी नेता हड़प गए थे, वैसे ही अब दुष्यंत के वोट बैंक पर इनैलो डाका डालने का प्रयास करेगी। कांग्रेस के जो वोट ओमप्रकाश चौटाला के कारण इनैलो में शिफ्ट होंगे, उससे कांग्रेस की सीटें घट सकती हैं। जाट वोट से इनैलो को फायदा होने के साथ भाजपा को भी कुछ गैर वोटबैंक जुड़ जाने से फायदा होने की उम्मीद है। इसी उम्मीद में भाजपा नेता हरियाणा में इनैलो की मजबूती में अपना फ़ायदा देख रहे हैं। देखना है कि हरियाणा में नये राजनीतिक समीकरण बदलने से किस को फायदा व नुकसान होगा, लेकिन ओमप्रकाश चौटाला की जेल से रिहाई से राजनीति गर्मी जरूरी बढ़ गई है।

क्या आज सचमुच दीवाली

चौटाला का अतीत बहुत विवादास्पद रहा है। लेकिन आज जेल से रिहाई मिलने के बाद जब उनका क़ाफ़िला गुड़गाँव के लिए चला तो हज़ारों कार्यकर्ता और सैकड़ों गाड़ियाँ क़ाफ़िले में थीं। सोशल मीडिया पर हरियाणा से उन्हें लेकर सुखद प्रतिक्रिया देखने को मिली। कुछ लोगों ने ट्वीट किया - हरियाणा में आज दीवाली है। कोई भी चौटाला के अतीत को याद करने को तैयार नहीं हैं।

निजी क्षेत्र ही चलाएगा सनफ्लैग, टेंडर जारी

खट्टर ने अपने विधायकों व सांसदों को दिखाया अंगूठा

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद: हरियाणा सरकार ने सन फ़्लैग अस्पताल को निजी क्षेत्र को सौंपने का फ़ैसला किया है। हूडा ने इसके लिए टेंडर आमंत्रित कर लिए हैं।

फ़रीदाबाद के तमाम लोगों की उस माँग को सरकार ने अंगूठा दिखा दिया है, जिसमें तमाम जन संगठनों ने माँग की थी कि सरकार इस अस्पताल को चलाए। फ़रीदाबाद के तमाम विधायक, मंत्री और सांसद भी चाहते थे कि हरियाणा सरकार ही इस अस्पताल को चलाए। लेकिन पूँजीपतियों के इशारे पर काम कर रही भाजपा सरकार ने अपने जन प्रतिनिधियों की भी नहीं सुनी। हालाँकि तमाम विधायकों ने सीएम को इसके लिए पत्र तक लिखा था।

हूडा ने सन फ़्लैग के लिए जो टेंडर जारी किया है, उसमें कहा गया कि इच्छुक कंपनी या लोग टेंडर की शर्तें पूरी करते हुए 22 जुलाई तक आवेदन करें।

सन फ़्लैग को वही संस्था या कंपनी टेकओवर कर सकती है जिसके पास पहले से सौ बेड या उससे ज़्यादा बेड का अस्पताल चलाने का अनुभव हो। पिछले लगातार तीन साल तक हर साल दस करोड़ का टर्नओवर हो। हूडा ऐसी संस्था या कंपनी को प्राथमिकता देगा जिसका दिल्ली एनसीआर में इस तरह का अस्पताल चलाने का तीन वर्षों का अनुभव हो। सन फ्लैग के मुद्दे पर खट्टर सरकार को अपने विधायकों की बात इसलिए अनसुनी करनी पड़ी, क्योंकि उसके पास पैसा ही नहीं है। जब उससे शहर का सबसे पुराना बीके अस्पताल, ईएसआई अस्पताल ही नहीं चलाए जा रहे तो ऐसे में एक और मुसीबत वो क्यों मोल लेगी। छायसां में गोल्डफील्ड अस्पताल ख़रीदकर वैसे भी सेना को चलाने के लिए देना पड़ा।

मायावती अपना घर संभाले, सपा की चिन्ता छोड़े

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली : उत्तर प्रदेश में अगले साल विधानसभा चुनाव हैं। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार घोर अलोकप्रियता की शिकार हो चुकी है। यही वजह है कि सारे राजनीतिक दल यूपी की तैयारी में जुट गए हैं। मायावती ने शुक्रवार को बयान देकर सपा को निशाने पर लिया।

यूपी के राजनीतिक हालात से मज़दूर मोर्चा आपको अवगत कराता रहेगा। पेश हैं इस हफ़्ते का घटनाक्रम...

- ओवैसी की पार्टी एआईएमईईएम ने यूपी की 100 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा की है।
- **सुहेल देव पार्टी के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर ने भागीदारी संकल्प मोर्चा बनाया। कई छोटे दल शामिल। ओवैसी की पार्टी भी आ सकती है। राजभर ने सपा से कहा कि वह इस गठबंधन में शामिल होना चाहती है तो सत्ता मिलने पर किसी मुस्लिम को डिप्टी सीएम बनाना होगा। इसके अलावा बारी- बारी से हर पार्टी के नेता को सीएम पद देना होगा।**
- सपा ने राजभर की पेशकश को ठुकरा दिया।
- बसपा सुप्रीमो मायावती ने स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी यूपी में अकेले चुनाव लड़ेगी। ओवैसी की पार्टी से गठबंधन की खबरों को ख़ारिज किया। मायावती ने शुक्रवार को बयान दिया कि समाजवादी पार्टी की घोर स्वार्थी, संकीर्ण व ख़ासकर दलित विरोधी सोच एवं कार्यशैली आदि के कड़वे अनुभवों तथा इसकी भुक्तभोगी होने के कारण देश की अधिकतर बड़ी व प्रमुख पार्टियाँ चुनाव में इनसे किनारा करना ही ज़्यादा बेहतर समझती हैं, जो सर्वविदित है।

उन्होंने कहा, इसीलिए आगामी यूपी विधानसभा आमचुनाव अब यह पार्टी (सपा) किसी भी बड़ी पार्टी के साथ नहीं बल्कि छोटी पार्टियों के गठबंधन के सहारे ही लड़ेगी। ऐसा कहना व करना सपा की महालाचारी नहीं है तो और क्या है?

इस बयान से साफ़ है कि मायावती छोटे दलों से सपा के गठबंधन को लेकर परेशान ज़रूर हैं।

- बसपा से सपा में आने वाले नेताओं की तादाद लगातार बढ़ रही है।
- कांग्रेस अभी भी यूपी को लेकर कोमा में है। ज़मीन पर उसका कोई काम नज़र नहीं आ रहा है। पार्टी के पास यूपी को लेकर कोई ठोस कार्य योजना नहीं है। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा की गतिविधियाँ भी यूपी में ख़ास नज़र नहीं आ रही हैं।

...ताकि गाद फिर से नाली में गिरे और जलभराव हो

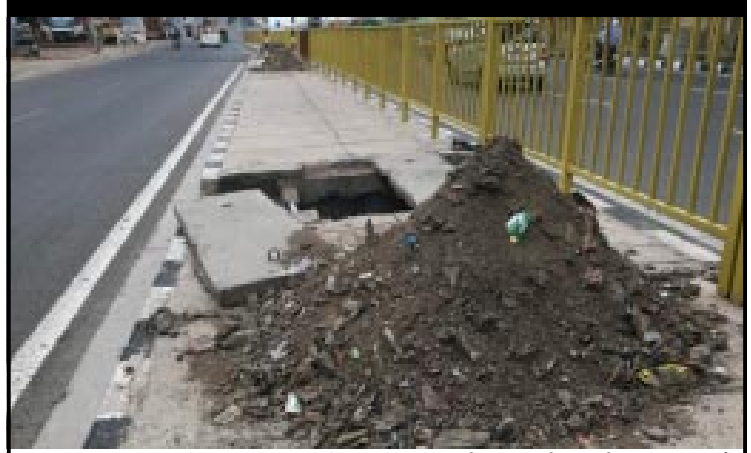

नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) इन दिनों शहर में नालों की सफ़ाई करवा रहा है और गाद और कूड़ा निकाल कर गटर या मैनहोल के किनारे छोड़ दिया गया है। कूड़े के ऐसे ढेर मथुरा रोड के किनारे देखे जा सकते हैं।

इस सफ़ाई के लिए टेंडर जारी किया गया है लेकिन एमसीएफ की ओर से कोई देखने वाला नहीं है। सब कुछ ठेकेदार पर छोड़ दिया गया है। मामूली बारिश से ये ढेर वापस नाले में चले जाएँगे और एमसीएफ में फैले भ्रष्टाचार की नींव को और मज़बूत करेंगे।